HISTORY

B.A.(Hon's) PART-II

Paper-III (Mediaeval Indian History)

Unit-III, (Empire Expansion Of Mohammad bin Tuglak)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 30

"मुहम्मद बिन तुगलक (1325–51) ई. का साम्राज्य विस्तार"

(Empire Expansion of Muhammad Bin Tuglak)

मोहम्मद बिन तुगलक कुशल प्रबंधक एवं साम्राज्यवादी शासक था। वह मंगोलो के आक्रमण को विफल कर साम्राज्य विस्तार की ओर उन्मुख हुआ। उसका उर्वर मस्तिष्क नई योजनाएं बनाने में अद्वितीय था। भले ही उसकी योजनाएं असफल सिद्ध हुई, लेकिन उसने साम्राज्य विस्तार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की। उसने पेशावर एवं कल्लूर विजय से प्रोत्साहित होकर विदेश में साम्राज्य विस्तार की योजना बनाया।

✓खुरासन विजय:–

तुगलक ने मिस्र के शासक एवं चुगताई सरदार के बहकावे में आकर खुरासन विजय के लिए अपनी सेना तैयार कर ली। लेकिन मिस्र के शासक ने खुरासन से संधि कर ली एवं उसके सरदारों ने चुगताई सरदार के राज्य को हड़प लिया। इस कारण तुगलक ने धन की हानि को सहकर बुद्धिमता का परिचय देते हुए खुरासन विजय का विचार त्याग दिया और भारतीय क्षेत्रों की विजय की ओर अपना ध्यान केंद्रित कर लिया।

✓नगरकोट की विजय:–

नगरकोट का दुर्ग पंजाब के कांगड़ा जिले का एक हिंदू राज्य था। तुगलक ने साम्राज्य की सुरक्षा की दृष्टि से आक्रमण कर वहां के पराजित शासक को अधीनता स्वीकार कराकर नगरकोट का दुर्ग उसे वापस कर दिया। इस प्रकार नगरकोट का शासक उसको कर देने लगा।

✓कराचल अभियान:–

कुमायूं के पहाड़ी में स्थित कराचल का राज्य था। मोहम्मद बिन तुगलक ने उत्तरी सीमा के सुरक्षा के लिए कराचल अभियान शुरू किया। तुगलक ने 1337 से 1338 ई. में खुसरो मलिक के नेतृत्व में एक विशाल सेना भेजी। जब वह जिदयानगर पर अधिकार कर तिब्बत की ओर बढ़ा तो बरसात शुरू हो गई। इस प्रकार उधर ही उसकी सारी सेना खत्म हो

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

गई। केवल तीन व्यक्ति अपनी दुर्भाग्य की कहानी सुनाने के लिए आए। इस अभियान का परिणाम यह निकला कि पहाड़ी राज्य ने सुल्तान के साथ संधि कर ली एवं कर देना स्वीकार कर लिया। लेकिन सैनिक दृष्टि से सुल्तान के लिए यह विनाशकारी सिद्ध हुआ।

✓चीन के साथ संबंध:–

तुगलक के शासन काल में 1341 ईस्वी में चीन के सम्राट तोगन तिमुर अपना एक राजदूत भारत में भेजा था। सुल्तान ने भी 1342 ईसवी में इब्नबतूता को चीन भेजा। जो 1347 ई में भारत लौट आया था। इस प्रकार आदान–प्रदान से यह सिद्ध होता है कि चीन के साथ भारत का संबंध मधुर था।

✓मंगोलो के आक्रमण :–

तुगलक के समय भारत के उत्तर पश्चिम में 1328–29 ई के बीच मंगोलो के कई आक्रमण हुए। लेकिन बिन तुगलक ने उन्हें धन देकर या मेरठ के नजदीक उन्हें हराकर वापस भेज दिया। इसके संबंध में इतिहासकारों के बीच मतभेद है।

✓दक्षिण भारत में विद्रोह:–

मोहम्मद बिन तुगलक दक्षिण भारत के राजनीति से पूर्णता परिचित था। मालाबार तट के अधिकांश भागों पर पहले ही अधिकार कर चुका था। राज्यरोहन के बाद बहाउद्दीन गुर्सास्प, जो गुलबर्गा के निकट सागर का सबेदार एवं सुल्तान का चचेरा भाई था, सुल्तान के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। तब शाही सेना उसका पीछा करते हुए काम्पिल पहुंचा। कंपिल विजय के बाद द्वारसमुद्र राज्य पर आक्रमण कर दिया। वहां का शासक वीर बलाल तृतीय बुरी तरह पराजित हुआ गुर्सास्प कैद कर दिल्ली भेज दिया गया। इस प्रकार वीर बल्लाल तृतीय ने भी तुगलक की अधीनता स्वीकार कर ली और उसके राज्य का अधिकतर भाग दिल्ली में मिला लिया गया।

✓कोठन की विजय:–

तुगलक ने 1328 ईस्वी में पुणे के निकट कोठन या सिंहगढ़ के कोली सरदारों के विद्रोह को दबाकर कोठन का क्षेत्र दिल्ली साम्राज्य में मिला लिया।

✓राजस्थान की विजय:–

सुल्तान ने राजस्थान के मेवाड़ के शासक राणा हमीर देव को हराकर उससे अपनी अधीनता स्वीकार करा ली।

इस प्रकार मोहम्मद बिन तुगलक का साम्राज्य विस्तार हिमालय से द्वार समुद्र एवं लखनौती से सिंध के थट्टा तक फैला हुआ था।

तुगलक को अपने शासन काल में अनेक छोटे–छोटे बिद्रोहो का भी सामना करना पड़ा जो इस प्रकार है–

* बंगाल का विद्रोह जो 1327–28 में हुआ था।

* सूनम एवं सुमाना का विद्रोह।

* कड़ा का विद्रोह 1337–38 ई. में निजाम माई ने किया था।

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

* 1338 –39 ई में बीदर का विद्रोह हुआ था।

* गुलबर्गा का विद्रोह 1339–40 में हुआ था।

* अवध का विद्रोह।

* मुल्तान का विद्रोह।

* मावर एवं मालाबार का विद्रोह 1334–35 ईसवी में हुआ था।

* दक्षिण में हिंदू राजाओं का विद्रोह।

*गुजरात का विद्रोह– गुजरात के विद्रोह को शांत करने के लिए सुल्तान सिंध के थट्टा पहुंचा। जहां उसका स्वास्थ्य गिरने लगा और वह यात्रा का सोदा नामक गांव पहुंचा। जहां 20 मार्च 1351 ई में वह स्वर्ग सिधार गया। इस प्रकार तुगलक के तूफानी जीवन का अंत हो गया।

निष्कर्ष तो हम कह सकते हैं कि मोहम्मद बिन तुगलक का शासन काल अत्यधिक उतार–चढ़ाव वाला रहा उसने अपने समय में अनेक योजनाएं लागू किए लेकिन सारी योजनाएं समय के आगे की चीज थी। अतः यह सारी योजनाएं असफल सिद्ध हुई। साम्राज्य विस्तार के क्षेत्र में भी उन्होंने उत्तर से दक्षिण तक अपना साम्राज्य विस्तार किया था। अपने शासनकाल के दौरान उसने छोटे–बड़े अनेक विद्रोहों को शांत किया। इस प्रकार कह सकते हैं कि बिन तुगलक एक कर्मठ एवं साम्राज्यवादी शासक था।

!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)